OM-10- 2021 FINAL FILE_Page 1 and 2 27-Jul-21 1:48 PM Page 6

विश्व रक्षक से बंधवायें रक्षा सूत्र

ब्र.कु.अनुज,दिल्ली

आने वाला समय कुछ ही दिनों में एक नया उमंग, एक नया उत्साह लेकर आने वाला है। जिसे हम सभी रक्षाबंधन के नाम से जानते हैं और इसे एक फेस्टिवल के रूप में बहुत समय से मनाते आ रहे हैं। आज भी उसका सबकुछ वैसे ही चल रहा है, रूप नहीं बदला है। थोड़े-बहुत तरीके बदल गये हैं। बस कहीं ऑनलाइन है, तो कहीं ऑफलाइन है। चाहे रिश्तों में कितनी भी दरारे हों लेकिन फिर भी उस दिन लोग लिहाज़ करके राखी बांध देते हैं एक-दूसरे को, पर इसके पीछे कोई अच्छी या पवित्र भावना नहीं होती। अब भाई-बहन का रिश्ता, जो दुनिया का सबसे पवित्र रिश्ता माना जाता है, उस रिश्ते में भी कितनी कड़वाहट आ गई है कि कोई एक-दूसरे को देखना तक नहीं चाहता। जब से और भी अच्छे-अच्छे कानून आये, बटवारे को लेकर कानून आये या और-और चीज़ों के कानून गवर्नमेंट ने बनाये तो उसकी वजह से तो और ज़्यादा खटास आ गई। रिश्ता तो सिर्फ नाम मात्र रह गया। इससे एक बात तो ज़ाहिर है, सिद्ध है, जायज़ है कि दुनिया में अगर कुछ बदलाव आया है, सरकार ने अगर कुछ बदलाव किये हैं तो उस बदलाव के पीछे ज़रूर कोई राज़ तो है। क्योंकि जैसे-जैसे स्थूल चीज़ों में परिवर्तन आया, सबके मन बदलते गये। त्योहार का कोई मतलब नहीं, रक्षा का कोई मतलब नहीं, रक्षा सूत्र का कोई मतलब नहीं। फिर भी थोड़े-बहुत ऐसे स्थान हैं जहाँ पर ये परम्परा कायम है। तो ये क्यों बदल रहा है तेजी से? क्यों इसमें बदलाव आ रहा है, क्योंकि सही रूप से न इसका इस्तेमाल हुआ और न हो रहा है। इसलिए इस दुनिया में रक्षक जिस भाई को हम कहते हैं और कहते कि रक्षा सूत्र का मतलब हमेशा दुनिया में रक्षा हमारी होती रहेगी, ये भाई हमारी रक्षा करेगा लेकिन कहीं-कहीं भाई छोटे भी होते हैं। इनको बहनें राखी बांधती हैं। अब वो छोटा भाई रक्षा कैसे करेगा? तो ये बात कुछ हज़म नहीं हो रही है।

इसलिए पवित्रता के आधार से जो रक्षा सूत्र बांधा जाता है, पवित्रता के लिए जो रक्षा सूत्र बांधा जाता है, पवित्रता से जो हमारी रक्षा होती है, वो किसी और चीज़ से नहीं हो सकती। दुनिया में जितनी भी पवित्र आत्मायें थीं, जिन्होंने परमात्मा को अपना सब कुछ माना, उनकी रक्षा स्वयं होती रही। कहा जाता है, जंगलों में ऋषि-मुनि, तपस्वी इतने-इतने समय तक तपस्या करते रहते थे। खूंखार जानवर तक भी आकर उनके आगे नतमस्तक होते थे। तो उन तपस्वियों ने तो न ही किसी को ऐसा रक्षा सूत्र बांधा और न ही बंधवाया। सिर्फ परमात्मा को याद करते रहे, तपस्या में लीन रहे। तो ये जो परम्परा बनी, इसका राज़ परमात्मा आकर हमको बतलाते हैं कि जब इस धरती पर स्थिति बदलती है, परिस्थिति बदलती है, तो उस चीज़ को पुनः जागृत करने के लिए हमको, पवित्रता का रक्षा सूत्र या पवित्रता का कंगन बांधना पड़ता है। और इसका यादगार सिख धर्म में बहुत जबरदस्त है जिसमें कच्छ, कंघा, कड़ा, कृपाण, कंगन धारण करते हैं, जिसे पवित्रता का कंगन भी कहा जाता है। जैसे ये कंगन हमने बांधा, पवित्रता के धागे को अपने साथ जोड़ा तो हमारे अन्दर वो बल आ जाता है, वो तेजस्विता आती है, वो ओजस्विता आती है, जिससे हम नैचुरल चारों तरफ से सुरक्षित हो जाते हैं। क्योंकि दुनिया का सबसे बड़ा विकार जिसको काम विकार कहा जाता है, उससे हमारी रक्षा होती है। काम विकार क्यों सबसे बड़ा विकार है क्योंकि इसी विकार के चलते दुनिया में इतने बड़े विध्वंस की स्थिति है, चारों तरफ स्थिति इतनी बद से बद्तर होती जा रही है कि लोग अपने ही घरों में असुरक्षित हैं।

आज आप अगर अखबार उठाकर देखेंगे तो किसी रिश्ते का कोई मायना नहीं है। चाहे वो भाई-बहन है, चाहे माता से किसी का रिश्ता है या फिर पिता का किसी से रिश्ता है। अब रिश्तों की क्या अहमियत है और रिश्तों के क्या मायने रह गये हैं! तो इसलिए सिर्फ और सिर्फ एक परमात्मा है जो हमको पवित्रता के साथ जोड़ता है, पवित्रता के साथ रक्षा करता है, पवित्रता से हमारी स्थिति को बदलता है।

वो कहते हैं कि आप पवित्र बनिये और स्वयं अपनी रक्षा करिये, इससे आपके आसपास का वातावरण भी ऑटोमेटिकली रक्षित हो जायेगा। तो इस रक्षा सूत्र का सीधा-सीधा अर्थ है पवित्रता का सूत्र, पवित्रता का बंधन। जितनी पवित्रता उतनी खुशी, उतनी शांति। ये तो आपने बार-बार सुना होगा कि जो जितना पवित्र है वो उतना शांत है, उतना खुश है। तो पवित्रता जैसे ही हमारे मन में आती है, शांति और खुशी बढ़ जाती है। अगर अशांति है, दुःख है, तकलीफ़ है, मतलब पवित्रता नहीं है। तभी तो आज इतना कुछ होते हुए भी, इतनी सारी परम्परा निभाते हुए भी हम ना-खुश हैं। तो उस परमपिता परमात्मा जो निराकार ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप हैं, जिनके अन्दर पतित से पावन बनाने का सबसे बड़ा गुण है। वैसे तो वो सागर हैं हर गुण के लेकिन सबसे बड़ा जो कार्य है उनका, वो है पतित से पावन बनाना। तो उस पतित पावन परमपिता परमात्मा से अगर हम रक्षासूत्र बंधवाते हैं तो निश्चित रूप से, हमेशा, हर पल, हर क्षण हम सुरक्षित महसूस करेंगे। तो आइए... इस बार ये करके देखते हैं।

मन की बातें

- राजयोगी ब्र.कु. सूर्य

प्रश्न : मेरा नाम परमानंद है। मेरी शादी को तीन साल हो गए हैं और मेरी पत्नी को हमारी फैमिली में किसी पर भी विश्वास नहीं होता। वो क्रोध और नकारात्मक विचारों में हमेशा घिरी रहती है। कृपया इसके लिए मुझे कोई समाधान बतायें।

उत्तर : हर मनुष्य को जिसकी ऐसी नेचर हो, सबमें डाउट रखता, कोई बात करता है ये सोचना कि ये मेरे बारे में ही बात कर रहे होंगे। कहीं कुछ हो गया तो लोग ये-ये सोच रहे होंगे मेरे बारे में। ये मनुष्य को बहुत निगेटिव बना देता है। इसलिए मैं सबको कहूँगा कि आप डाउटफुल नेचर को चेंज करें। अपने में डाउट रखने से, दूसरों में डाउट रखने से हमारी सूक्ष्म शक्तियां नष्ट हो जाती हैं जो दिनों दिन कमज़ोर करती रहेंगी हमारी शक्तियों को, क्षीण बनाती रहेंगी और एक दिन वो आयेगा कि बिना मतलब हम परेशान रहेंगे क्योंकि जब हमारा सेंसिटिव नेचर हो जाता है। आप एक बहुत अच्छा प्रयोग अपनी पत्नी के लिए करेंगे। रोज़ सवेरे पांच बजे अच्छा होगा जब वो सोई हों तो आप मेडिटेशन करके दस मिनट फिर उन्हें आत्मा देखेंगे, मस्तक में चमकती हुई ज्योति, ये आत्मा है और ऐसा संकल्प देंगे कि ये बहुत अच्छी आत्मा है। उसका हमारे परिवार से बहुत प्यार है। वो हमारे परिवार में एक भाग्यवान आत्मा आई है, इससे आपके विचार सुन्दर होंगे। आपको साथ में उन्हें ये संकल्प भी देना है कि तुम्हें सभी में बहुत विश्वास है, सभी तुम्हारे शुभ चिंतक हैं, सभी तुम्हारे लिए अच्छा सोचते हैं, सभी तुम्हारे कॉपरेटिव हैं। सबमें विश्वास करो तो तुम्हारा जीवन बहुत सुन्दर होगा। ये संकल्प आपको करना है। टाइम फिक्स कर लें 21 दिनों के लिए। फिर आप देखेंगे कि कुछ दिन के बाद जब वे उठेंगी तो उन्हें वही संकल्प आयेंगे जैसे आप उन्हें भेजेंगे। और साथ-साथ उन्हें ये भी संकल्प देते रहना- तुम तो शांत स्वरूप आत्मा हो, शांत हो जाओ, शांत हो जाओ। बस, बहुत सुन्दर इफेक्ट आप देखेंगे।

प्रश्न : मैं ओडिशा से हूँ। मेरा एक बेटा है, वो 25 साल से गुटखा खाता है, सिगरेट भी पीता है। हमने उसे कितनी बार समझाने की कोशिश की, उसे ये भी बताया कि इनको लेने से कैंसर होता है लेकिन फिर भी वो हमारी बात नहीं सुनता। इसके लिए क्या करें कि वो हमारी बात मानें और ये सब छोड़ दे?

उत्तर : आपको अपने अन्दर ऐसी स्पीरिचुअल पावर भरनी है कि आपकी बात उस पर असर करे। क्योंकि कई युवक ऐसे हैं जो इन चीज़ों के दुष्परिणामों को महसूस नहीं कर रहे हैं। उनको रियलाइजेशन कराना होगा और कुछ अच्छे संकल्प भी देने होंगे। पहले मैं आपके लिए एक बात कहूँगा कि आप कुछ दिन तक सारे दिन में कम से कम 25 बार बहुत डीप गुड रियलाइजेशन के साथ अभ्यास करेंगे कि मैं एक महान आत्मा हूँ, मैं पूर्वज हूँ... इसमे क्या होगा कि आपके बोल में प्रभाव आ जायेगा। और दूसरा जब उसे देखते हैं तो उस नज़र से न देखें कि वो मेरा बेटा है मानता क्यों नहीं। वो एक आत्मा है और बहुत अच्छी आत्मा है। भले आपको दिख रहा है कि वो अच्छा नहीं है लेकिन सभी आत्मायें तो भगवान के बच्चे हैं। इससे आपके गुड वायब्रेशन उसको जायेंगे। दूसरा, सवेरे 5 बजे उसे गुड वायब्रेशन देंगे कि मुझ आत्मा से प्योर एनर्जी उस आत्मा को जा रही है। ऐसा 10 मिनट करें और संकल्प देना कि तुम तो देव कुल की आत्मा हो, तुम तो बहुत पवित्र हो, ये व्यसन आदि तुम्हारी चीज़ें नहीं हैं, इन्हें छोड़ दो। कुछ ही दिनों के बाद आप देखेंगे कि उनको फिर संकल्प आयेगा कि मुझे ये छोड़ना चाहिए। लेकिन आपको अपने अन्दर स्वमान की शक्ति और आत्मिक दृष्टि का अभ्यास बढ़ाना होगा। फिर आप उन्हें बड़े प्यार से कहें कि बेटा छोड़ दो इसे इससे तुम्हारा भविष्य अच्छा नहीं रहेगा। तुम तो बहुत समझदार हो ऐसे प्यार से बात करेंगे तो आप देखेंगे कि वो आपकी बात सुनेगा और रियलाइज़ करेगा कि मैंने आज तक जो गलती की या जो आज तक गलत उत्तर दिया है उसके लिए मैं क्षमा याचना करता हूँ।

प्रश्न : मेरा नाम पूनम जैन है। मैं कलकत्ता से हूँ। मेरा प्रश्न है कि मेरा एक बेटा है जो सात साल का है। वो जब मेरी बात नहीं सुनता है तो मैं उसे थप्पड़ लगा देती हूँ, लेकिन थप्पड़ लगाने के बाद मुझे बहुत पछतावा होता है। कृपया बतायें मुझे क्या करना चाहिए?

उत्तर : बच्चे क्या है स्वभाव से बड़े ही चंचल होते हैं। कुछ भी करते हैं यही उनका एन्जॉयमेंट होता है माताओं को उनसे इरिटेट नहीं होना चाहिए। आप एक छोटी-सी प्रैक्टिस करें। जब भी आप अपने बच्चे को देखें तो आत्मिक दृष्टि से देखें। वो आत्मा है। जब आप आत्मिक दृष्टि रखेंगे तो आपका स्नेह भी आत्मिक हो जायेगा। और अपने लिए रोज़ थोड़ी-सी प्रैक्टिस करें आई एम पीसफुल सॉल। क्योंकि धैर्यता बहुत बड़ी चीज़ है। धैर्यता के अभाव में क्रोध आता है। अगर आप कुछ कर रही हैं और बच्चा बीच में कुछ करने लग जाये तो आप इरिटेट होंगी लेकिन आप इसे एन्जॉय करें। माताओं को अपने बच्चों की हर एक्टिविटी का थोड़ा एन्जॉय भी करना चाहिए। बहुत प्यार से उन्हें सिखाना है। क्योंकि बच्चे सिखने के लिए तैयार रहते हैं। लेकिन माताओं में सिखाने की कला होनी चाहिए। डांट-डपट कर नहीं बहुत प्यार से, अपनेपन से। और अगर आप आत्मिक दृष्टि से उन्हें अपनी बात सुनायेंगे तो आपका बच्चे पर अच्छा प्रभाव होगा। और आपकी बात भी सुनेगा। बच्चों की चंचलता को ज़्यादा माइंड भी नहीं करना चाहिए।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com